

## पद ९७ (हिंदी)

(राग: झिंजोटी - ताल: धुमाळी)

नहाने चलो अमृतकुंडनमो ॥ध्रु.॥ ब्रह्मकमंडलु का जल भयो ।  
सब तीरथफल पाने चलो ॥१॥ अंगरोग सब नहातेहि जावे । पावे  
कैलास ठिकाने चलो ॥२॥ माणिक के मन इच्छित पूरन । संगमेश  
दर्शन लेने चलो ॥३॥